रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के0पी0सिटी– 67/2021–23

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही,
कानपुर–208014

वर्ष –43 ● अंक – 14 ● कानपुर 16 से 31 जुलाई 2021 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

पद्धति के लिये अब पारदर्शिता दिखानी होगी–डा0 इदरीसी

शोर मचाने का अब समय चला गया
आयुष के नाम पर कब तक भ्रमित करेंगे

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में रोज़ नये–नये परिवर्तन हो रहे हैं, यह परिवर्तन अगर सकारात्मक हों तो पद्धति के विकास में सहायक हो सकते हैं और यदि यही परिवर्तन नकारात्कता का स्वरूप ले ले तो पद्धति के विकास को अवरूद्ध करने में सहायक होते हैं गत वर्षों में जो मूल–भूत परिवर्तन हुये हैं वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्थाओं में परिवर्तन ला चुके हैं और तो और इसका परिणाम यह हो गया है कि जो वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में लगे थे वह आज नाम बदल कर सामने आ रहे हैं।

अनेक ऐसे लोग भी हैं जिनमें निराशा इस कदर घर कर गयी है कि काम तो करना चाहते हैं परन्तु दिशा भ्रमित होने के कारण वे एक दूसरे के अधिकारों का अतिक्रमण करे तो यहां तक तो ठीक है परन्तु अब तो लोग बलात अतिक्रमण करने लगे हैं, जीवन पर्यन्त इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ाव रखने के कारण न तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को छोड़ पा रहे हैं और न ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी से मोह भंग हो पा रहा है।

जब हम इस विषय पर विचार करते हैं कि जब इन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य नहीं करना है तो फिर इस पद्धति को अपने असफल प्रयासों से दूषित क्यों कर रहे हैं ? सोचने के बाद मन में यही उत्तर आता है कि संभवतः जो साख उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कमायी है उसको छोड़ना भी नहीं चाहते और भुना तो पा ही नही रहे हैं, इन्हीं सम विषम परिस्थितियों के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी उस स्थान को नहीं प्राप्त कर पा रही है जो उसे प्राप्त कर लेना चाहिये, जब हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय अधिकार दिलाने के लिए सरकार से लड़ते थे तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चरम पर थी।

आज जब केन्द्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन के लिए सारे अधिकार दे दिये गये हैं तब भी हम विकास की राह पर बढ़ नहीं पा रहे हैं यह एक ऐसा यक्ष प्रश्न है जिस पर यदि शीघ्र उत्तर नहीं पाया गया तो शायद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उस विकास का सपना जो हम सब लोगों ने देख रखा है आसानी से सम्भव न हो सके, इन्हीं सब विषयों पर गम्भीरता से चिन्तन के लिए व भविष्य की ठोस रणनीति तैयार करने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया द्वारा 21 जून, 2021 को कानपुर में विजय दिवस के अवसर पर विकासोन्मुखी चिन्तन बैठक का आयोजन किया गया इसकी अध्यक्षता एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 मो0 हाशिम इदरीसी ने की।

उपस्थित सदस्यों ने अपने–अपने विचार रखे इस बैठक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि हर विचार सकारात्मक दृष्टिकोंण के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए ही थे, छिद्रान्वेषण के लिए कोई भी स्थान नहीं था विभिन्न पहलू पर चर्चा होने के बाद सामूहिक रूप से जो निचोड़ आया उस पर निर्णय लेते हुए माननीय अध्यक्ष जी ने तय किया कि यदि वास्तव में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को विकास के रास्ते पर ले चलना है तो हमें परदर्शिता के साथ निर्णय लेने होंगे यह निर्णय किसी व्यक्ति विशेष या संस्था के लिए न होकर सामूहिक हों क्योंकि अब समय आ गया है कि निजी हितों से ऊपर उठकर सिर्फ़ चिकित्सा पद्धति के लिए कार्य किया जाये, इसके मूल में यह है कि जब कोई चिकित्सा पद्धति पुष्पित पल्लवित होती है तो उससे जुड़ा हर व्यक्ति स्वतः समृद्धिशाली हो जाता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और सम्भावनायें भी असीम हैं इन सम्भावनाओं से परिणाम निकालना हमारा अपना कार्य है, ऐसे व्यक्ति जो स्वार्थ से लिप्त होकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अन्य पद्धतियों के साथ जोड़कर विकास यात्रा में शामिल होना चाहते हैं उनके स्वप्न कभी पूरे होते नहीं दिखते क्योंकि हर चिकित्सा पद्धति की अपनी उपयोगिता होती है।

गत वर्षों से योग और नेचुरोपैथी की चकाचौंध से हमारे कुछ साथी इस कदर प्रभावित हैं कि वे इलेक्ट्रो होम्योपैथी को इसके साथ घालमेल करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आवरण पहने रहना चाहते हैं यह कितना तर्क संगत है ? यह तो वही जान सकते हैं जो इस तरह की धारणा के पोषक हैं हालांकि योगा को अपनाना कोई बुरी बात नहीं है इसको अपना कर हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी को और भी निखार सकते हैं।

ऐसी धारणायें हो सकती हैं कुछ समय तक उन्हें यश और धन प्रदान कर दें लेकिन नेचुरोपैथी से धनार्जन तो कर सकते हैं परन्तु जब स्वंय उनका अन्तर्मन इस विषय पर चिन्तन करने के लिए विवश करेगा तो शायद वह स्वयं को क्षमा नहीं कर पायेंगे। आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी से काम करने की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है कहीं पर कोई रूकावट या असहजता जैसी बात नहीं है फिर भी तालमेल की जगह घालमेल का काम जारी है।

सबसे महत्वपूर्ण चौंकाने वाली बात औषधि निर्माण के क्षेत्र से है आज पूरे भारत में सैकड़ों की संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि निर्माणशालायें जन्म ले चुकी हैं और हर औषधि निर्माता गुणवत्ता युक्त औषधि निर्माण का दावा कर रहा है, हम उनके दावे को खारिज नहीं करते हैं परन्तु असमंजस्य का विषय यह है कि वे प्रदर्शन से क्यों कतराते हैं ! पहले काग़जी सत्यापन होते थे अब भौतिक सत्यापन का समय है इसलिए अगर किसी निर्माणशाला का भौतिक सत्यापन किसी सक्षम अधिकारी द्वारा किया जाये तो निर्माण शाला संचालक अपनी निर्माण प्रक्रिया और अधिकारों के बारे में अधिकारी को बता कर संतुष्ट कर दें, यदि थोड़ी बहुत कमी है तो वह क्षम्य हो सकती है लेकिन जहां कुछ भी नहीं है और उस विषय पर गलत प्रचार किया जाये तो यह विषय कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

आजकल कुछ कम्पनियां लाइसेंस शुदा दवा बना रही हैं अब आप इन दवा निर्माताओं से पूछिये कि आप को किस इकाई ने निर्माण का लाइसेंस प्रदान कर रखा है ? क्योंकि जिस संगठन को भारत सरकार ने अधिकृत कर रखा है उस संगठन द्वारा अभी तक किसी भी औषधि निर्माता को औषधि निर्माण का प्रमाण पत्र नहीं दिया गया है जिन लोगों के पास किसी तरह का लाइसेंस है वह लाइसेंस खाद्य एवं औषधि प्रशासन प्राधिकरण द्वारा खाद्य उत्पादन के लिये प्राप्त किये गये हैं इस तरह के प्राप्त लाइसेंसों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों का निर्माण कैसे सम्भव है ? इसका उत्तर वही निर्माता दे सकते हैं जो इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं, हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि ज्यों–ज्यों विकास होता है त्यों–त्यों उसे कसौटी पर कसा भी जाता है भारत सरकार स्वास्थ्य के प्रति ज़्यादा सजग है और औषधि के क्षेत्र में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाये हुए है।

COVID-19 के इलाज के लिये भारत सरकार द्वारा व्यापक दिशानिर्देश दिये गये जिसमें एलोपैथी चिकित्सा पद्धति को छोड़कर अन्य किसी चिकित्सा पद्धति को कोई स्थान नहीं दिया गया, जबकि COVID-19 के अतिरिक्त अन्य सामान्य बीमारियों का इलाज इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों द्वारा निरन्तर किया जाता रहा COVID-19 के लिये विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुरुप ही भारत सरकार द्वारा दिशा निर्देश जारी किये जाते रहे देश की आवश्यकताओं को भली–भाँति जानते हुये तथा COVID-19 के शमन हेतु शरीर में इम्युनिटी बढ़ाने के लिये माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हित एवं प्रकृति को जानते हुये आयुष पद्धतियों से इम्युनिटी बूस्ट करने वाली औषधियों के प्रयोग का आवाहन किया तथा अपने संबोधन में काढ़े का विशेष रुप से उल्लेख किया, माननीय प्रधनमंत्री जी के इस उदबोधन के पश्चात आयुष पद्धतियों ने इम्यूनिटी बूस्ट करने वाली औषधियों का चयन कर अनेक उत्पाद ब्राण्डेड व नॉन ब्राण्डेड मार्केट में उतार दिये, आयुष उत्पादों के साथ ही निसंदेह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधि निर्माताओं नें भी COVID-19 के शमन के लिये प्रधानमंत्री जी के उदबोधन के अनुरुप औषध्यिों का उत्पादन अवश्य किया होगा परन्तु ऐसा कोई भी उत्पाद मार्केट में नहीं दिखा और न ही किसी संस्था संगठन द्वारा COVID-19 से बचाव के लिये जागरुकता अभियान चलाया गया हो, सिवाय जनपद महाराजगंज के धनपत लाल मेमोरियल मेडिकल स्टडी सेन्टर ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी द्वारा जो वर्ष 2020 से महाराजगंज, गोरखपुर, नौतनवा एवं नेपाल बॉर्डर पर निरन्तर चलाया जा रहा है जिसमें हज़ारों रोगियों को लाभ भी पहुँचाया गया है इनकी सेवाओं से प्रभावित होकर जपनद महाराजगंज के सी0एम0ओ0 द्वारा इनके कैम्प में विज़िट कर प्रशंसा भी की है इसे ही कहते हैं पारदर्शिता।

आवश्यकता है चिन्तन करने की

मनुष्य के जीवन में चिन्तायें आती और जाती रहती हैं या दूसरे शब्दों में कहा जाये कि जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं में चिन्तित होना भी एक घटना है, चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ा हुआ हर व्यक्ति भी मानव की श्रेणी में आता है इसलिए उनका चिन्तित होना स्वाभाविक ही है, लेकिन यह कटु सत्य भी है कि चिन्ता से किसी समस्या का समाधान नहीं होता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिन्ताओं के विविध स्वरूप हैं, चिकित्सक चिन्तित हैं कि उसका जनपदीय रजिस्ट्रेशन नहीं हो रहा है, पंजीयन की प्रेरणा देने वाले इसलिए चिन्तित हैं कि चिकित्सक पंजीयन का आवेदन नहीं कर रहा है, कालेज चलाने वाले चिन्तित हैं कि उनके यहाँ प्रवेश नहीं हो रहे हैं, शीर्ष संस्थायें अपने अस्तित्व के लिए चिन्तित हैं, शीर्ष संस्थाओं से जुड़े कर्मचारी अपने भविष्य को लेकर चिन्तित हैं, कार्यालय के कार्यकर्ता अपनी टेबल को लेकर चिन्तित हैं, इस तरह देखा जाये तो हर व्यक्ति चिन्ता ग्रस्त ही दिखता है।

मगर मूल प्रश्न यह है कि क्या इन चिन्ताओं से कुछ हासिल होना है ? जब चिन्ताओं से कुछ मिलना नहीं तो चिन्ता क्यों करें ! सफ़लता पाने के लिए चिन्ता का स्थान चिन्तन को मिलना चाहिये, चिन्तित व्यक्ति कभी भी सकारात्मक सोच के साथ कार्य कर ही नहीं सकता और जहाँ नकारात्मकता पहले ही प्रभावी हो वहां से किसी भी अच्छे परिणाम की आशा करना व्यर्थ ही है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज जिस स्थिति में है वह एक स्पष्ट चिन्तन की आवश्यकता महसूस करती है क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भविष्य आज भी स्पष्ट है, बस ज़रूरत है तो एक ऐसी नीति निर्धारण करने की जिसपर चलकर भविष्य की रूपरेखा तय की जा सके, यदि हम आज की स्थिति पर दृष्टि डालते हैं तो और खोया पाया के दृष्टिकोंण से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मूल्यांकन करते हैं तो पाने का पलड़ा ज़्यादा भारी है, हम लगातार पा ही तो रहे हैं, पाने का सिलसिला जो 25 नवम्बर, 2003 से शुरू हुआ था वह आज भी यथावत है, 5–5–2010, 21 जून, 2011, 4 जनवरी, 2012, 2 सितम्बर, 2013 व 14 मार्च, 2016 यह सारी तिथियां हमें कुछ न कुछ दे ही रही हैं और इतना दे रही हैं कि जिनका की हम उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, सबकुछ पा कर कुछ भी न पाने जैसा प्रदर्शन करना इस बात को स्पष्ट करता है कि हमारे आत्मबल में इतनी कमी आ गयी है कि सामने रखे गेंद को भी पत्थर समझ कर बच कर निकलने का प्रयास करते हैं और फिर शुरू होता है चिन्तित होने का अन्तहीन सिलसिला और यदि यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहा तो जो कुछ पाया है या तो काल के गाल में समा जायेगा या फिर इसका लाभ वही उठा पायेंगे जिनकी दृष्टि दूरदर्शी होगी।

चिन्ताओं के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कोई स्थान नहीं होना चाहिये और जो चिन्तित व्यक्ति हैं उन्हें चिन्तन बैठकों में जाकर आत्म चिन्तन करना चाहिये कि भविष्य का निर्धारण उन्हें कैसे करना है ! उदर पोषण की भावना से ऊपर उठकर एक वैभवशाली जीवन की कल्पना करते हुए कार्य करें क्योंकि जीवन में कुछ भी नामुमकिन नहीं होता, किसी कवि ने ठीक ही कहा है आदमी सोच तो ले उसका इरादा क्या है ! जब इरादा पक्का होता है तो चिन्तायें उनकी राह में रोड़ा नहीं अटकाती हैं, इस बात में कोई दो राय नही है कि आज की बाज़ारवादी संस्कृति ने परिभाषायें व मूल्य बदल कर रख दिये हैं मंज़िल के स्थान पर बाज़ार नज़र आते हैं लेकिन ऐसे व्यक्ति चिन्ताओं से परे होते हैं इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हर व्यक्ति का यह दृष्टिकोंण होना चाहिये कि जीवन के पथ पर चिन्तित रहते हुए प्रगति नहीं पायी जा सकती है जो व्यक्ति चिन्तित हैं या तो उनकी चिन्ता दूर करने का प्रयास करना चाहिये या फिर उनसे किनारा कर लेना चाहिये चूंकि हमें ज़िन्दा रहना है और ज़िन्दगी का सफ़र बहुत लम्बा है, चिन्ता के बारे में यह उक्ति है कि चिन्ता जीव समेत अस्तु उज्जवल भविष्य की कामना के साथ सुखद जीवन की कल्पना लिये हुए भविष्य की सुन्दर लालसा के साथ सिर्फ़ कार्य करें चिन्ताओं को स्थान न दे।

अतः अब आवश्यकता है कि अपना सारा चिन्तन भावी योजनाओं को पूर्ण करने में लगाया जाये।

तिथियों का तिलिस्म समझना होगा

जीवन में तिथियों का महत्व होता है और हर तिथि का अपना अलग–अलग महत्व होता है इन तिथियों की जीवन में हर समय उपयोगिता और महत्ता होती है जिस प्रकार वर्ष भर में 12 महीने होते हैं और हर महीने में जितनी भी तिथियां पड़ती हैं उनका अलग–अलग महत्व होता है, कोई जन्म दिन की तिथि होती है तो कोई मरण की तिथि होती है, कोई विवाह की तिथि होती तो कोई अलगाव की होती है, हर तिथि अपनी अलग पहचान रखती है जो जिस तिथि को पैदा होता है वह उसी दिन अपना जन्म दिन मानता है चूँकि उस व्यक्ति को अपने उस तिथि की महत्ता पता होती है इसी तरह हर त्यौहार चाहे होली हो या दिवाली, ईद हो या बक़रीद क्रिसमस हो या गुडफ्राईडे, गुरू गोविन्द सिंह का जन्म दिन हो या गुरुनानक का जन्म दिन, हर महत्वपूर्ण दिन का अपना अलग महत्व होता है और हम सब इन तिथियों की महत्ता को नहीं भूलते और निश्चित तिथि पर ही कार्यक्रम मनाते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी कुछ महत्वपूर्ण तिथियां हैं जिनका अपना अलग–अलग महत्व है, हमें हर तिथि के बारे में जानना चाहिये और इन तिथियों पर कार्यक्रम भी आयोजित करने चाहिये।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में 7 महत्वपूर्ण तिथियां हैं जो क्रमशः इस प्रकार हैं :– 04 जनवरी,11 जनवरी, 24 अप्रैल, 21 जून, 25 जुलाई, 04 सितम्बर और 30 नवम्बर।

अब हम इन तिथियों के बारे में आपको विस्तार से अवगत कराते हैं ताकि यह तिथियां और इनके महत्व को आप अपने मस्तिष्क में अंकित कर सकें।

04 जनवरी का दिन उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि 4 जनवरी, 2012 को उत्तर प्रदेश के चिकित्सा विभाग ने बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के पक्ष में प्रथम और महत्वपूर्ण शासनादेश जारी कर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा, शिक्षा, रजिस्ट्रेशन और अनुसंधान का अधिकार प्रदान किया है, इस तिथि को अधिकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है, इस तिथि का सबसे अलग महत्व है क्योंकि प्रदेश में अधिकारपूर्वक कार्य करने के लिए इस तिथि का योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता है।

11 जनवरी की तिथि की महत्ता को हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ जानता है, 11 जनवरी, 1809 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक डा0 काउण्ट सीज़र मैटी का जन्म इटली में हुआ था पूरे विश्व में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समर्थक 11 जनवरी का दिन डा0 काउण्ट सीज़र मैटी के जन्मदिन के रूप में उत्साह पूर्वक मनाते हैं।

24 अप्रैल के दिन की अपनी अलग महत्ता है, प्रदेश में एक मात्र विधि सम्मत ढंग से स्थापित व प्रदेश सरकार द्वारा आदेश प्राप्त संस्था बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की स्थापना 24 अप्रैल, 1975 को कानपुर में डा0 मो0 हाशिम इदरीसी द्वारा की गयी थी, आपको यह भी जानना होगा कि डा0 इदरीसी के एकल प्रयासों का परिणाम है कि आज पूरे देश में यदि किसी संस्था विशेष के लिए शासनादेश जारी किया गया है तो वह है बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0। इसलिए 24 अप्रैल के दिन को स्थापना दिवस के रूप में प्रति वर्ष धूमधाम से मनाया जाता है।

21 जून की तिथि की महत्ता को कोई भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ भूल ही नहीं सकता, आपको याद होगा कि 25 नवम्बर, 2003 को भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,स्वास्थ्य अनुसंधान पटल द्वारा जारी आदेश जिसके गलत व्याखित होने के कारण पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक अघोषित बन्दी की तरफ़ मुड़ गयी थी हर तरफ़ निराशा और अवसाद था, तब 5–5–2010 को भारत सरकार ने एक स्पष्टीकरण जारी करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नवजीवन तो प्रदान कर दिया परन्तु यह नवजीवन कार्य करने का रास्ता नहीं खोल रहा था तब डा0 इदरीसी ने अपने बौद्धिक क्षमता का परिचय देते हुए जिस सूझ–बूझ के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कार्य करने का अवसर दिलाया उसका परिणाम 21 जून रहा, डा0 एम0एच0 इदरीसी के व्यक्तिगत और साहसी प्रयासों के कारण ही भारत सरकार ने 21 जून, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया के पक्ष में एक आदेश जारी करके पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा, शिक्षा और अनुसंधान की राह खोल दी और साथ–साथ प्रत्येक राज्य सरकार एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को आदेशित किया कि 21 जून, 2011 के इस आदेश का क्रियान्वयन अपने–अपने राज्य में करें, यह एक महत्वपूर्ण विजय है इसलिए इस तिथि को हम सब विजय दिवस के रूप में मनाते हैं। आपको यह भी जानना आवश्यक है कि इस संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 इदरीसी ही हैं, आज पूरा देश जिस विजय दिवस को विजय के रूप में मनाता है इसका श्रेय भी डा0 इदरीसी को ही जाता है।

25 जुलाई की तिथि का अपना अलग वैशिष्ट है, 25 जुलाई 1978 को कानपुर में डा0 इदरीसी द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया का गठन किया गया था यह संगठन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों, छात्रों, विद्यालयों व इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करता है इसलिए 25 जुलाई का दिन इहमाई दिवस के रूप में पूरे देश में धूम–धाम से मनाया जाता है।

4 सितम्बर को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक डा0 काउण्ट सीजर मैटी का स्वर्गारोहण हुआ था इस तिथि को हम इलेक्ट्रो होम्योपैथ मैटी की पुण्य तिथि के रूप में मनाते हैं और शपथ लेते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास एवं प्रचार व प्रसार के लिए जीवन पर्यन्त कार्य करते रहेंगे।

30 नवम्बर को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मूधर्न्य विद्वान डा0 नन्दलाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर, 1889 को हुआ था इस तिथि को सिन्हा जयन्ती (प्रेरणा दिवस) के रूप में मनाते हैं।

इस तरह से वर्ष पर्यन्त हम कुल 7 तिथियों को अति महत्वपूर्ण ढंग से आयोजित करते हैं 30 नवम्बर का दिन प्रेरणा दिवस के रूप में भी याद किया जाता है, पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों को चाहिये कि इन तिथियों को याद रखें और स्वयं कार्यक्रम आयोजित करें तथा दूसरों को भी कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रेरित करें यदि सम्भव हो सके तो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा एवं जागरूकता शिविरों का आयोजन भी करें ऐसा करने से जनमानस के बीच में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रचार व प्रसार होगा व परस्पर संवाद भी स्थापित होगा।

आशा है कि इन तिथियों को आप विस्मृत नहीं करेंगे। यदि तिथियां विस्मृत होंगी तो आपके कार्यों का और जिससे प्रेरणा लेकर आप कार्य कर रहे हैं उनका क्या होगा ? अब जब पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने का अच्छा वातावरण है तो इस वातावरण का हम सब उपयोग करें और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करें।

डा0 मैटी ने जिस महत्वपूर्ण विधा को जन्म दिया है जिसके मूल में मानवता की सेवा ही है ऐसी मानवतापूर्ण चिकित्सा पद्धति से प्रेरित होकर जनसाधारण की सेवा करना हम इलेक्ट्रो होम्योपैथों का नैतिक कर्तव्य है जिस तरह से जो जिस धर्म से जुड़ा है वह उस धर्म के प्रति आस्थावान होता है तथा उसकी महत्वपूर्ण तिथियों/त्योहारों को धूम–धाम से मनाता है ठीक इसी तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथों का धर्म इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही है इसलिए इस धर्म के विकास के लिए जिन तिथियों का महत्व है उन्हें हमें उतने ही उत्साह से मनाना चाहिये जितने उत्साह से हम जीवन के अन्य महत्वपूर्ण तिथियों/त्योहारों को मनाते हैं।

हम इन तिथियों को यदि इनकी उत्पत्ति के अनुरूप महत्व देंगे तथा इनकी महत्ता को कायम रखने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न स्तरों के कार्यक्रम आयोजित करेंगे तो उससे जनमानस को जहां एक ओर लाभ पहुंचा सकते हैं वही दूसरी ओर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास एवं प्रसार भी होगा, हम इन तिथियों पर कार्यक्रम आयोजित कर राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में भी अपना योगदान दे सकते हैं।

कुछ नया तलाशने का शौक

लोग जीवन भर नवीनता की तलाश में भटकते रहते हैं और इसी नये के भ्रम जाल में उलझते हुए जीवन के उद्देश्य से भटक जाते हैं परिणाम यह होता है कि उन्हें कुछ नया तो मिलता नहीं है और पूराने को भी गवां देते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी में लगभग आज भी 90 प्रतिशत लोग नये की तलाश में भटक रहे हैं वह यह नहीं सोच पाते कि घटनायें तो रोज़ घटती हैं लेकिन कुछ चीज़ें बार–बार नई नहीं होती हैं जैसे माता पिता एक बार मिल जाते हैं जीवन भर वह हमें संरक्षण देते हैं क्या किसी को जीवन में कई बार नये माता पिता मिलते हैं ? तो इसका उत्तर शायद 100 प्रतिशत लोग न में ही देंगे। अपवाद हर जगह होते हैं इसलिए उनकी चर्चा नहीं होनी चाहिये यहां पर यह प्रसंग इसलिए लिखा जा रहा है क्योंकि प्रतिदिन हज़ारों व्यक्ति जिम्मेदार लोगों से पूछते हैं कि कुछ नया हुआ क्या ? यदि यह प्रश्न कोई नव प्रवेशी या नया समर्थक करे तो बात समझ में आती है कि शायद इस व्यक्ति की जिज्ञासा होगी लेकिन जिन्होंने अपना पूरा जीवन इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा में गुज़ार दिया हो और जब ऐसे लोग इस तरह के प्रश्न करते हैं तो बहुत अटपटा लगता है, नये की तलाश हमें तब थी जब हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे आज अधिकार मिल चुके हैं सिर्फ़ कार्य करना है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत कुछ नया हुआ है सबसे पहला नया 27 मार्च, 1953 को हुआ जब उत्तर प्रदेश सरकार ने पहला अर्धशासकीय पत्र जारी किया था और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण मिलने की आस जगी थी, दूसरा नया हुआ था 24 अप्रैल, 1975 को जब बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की स्थापना हुई थी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए विद्यालयी अवधारणा आकार में लायी गयी थी, तीसरा नया हुआ था जब 18 नवम्बर, 1998 को माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए भारत सरकार सहित सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को दिशा निर्देश जारी किये थे, चौथा नया हुआ था 25 नवम्बर, 2003 का वह आदेश जो अज्ञानता व अविवेक के कारण उस समय विष बन गया था आज वही संजीवनी बनकर सामने है, पांचवा नया 5–5–2010 को हुआ था जब सात साल की गहरी निराशा के बाद आशा की किरण जगी थी, छठा नया हुआ था जब 21 जून, 2011 को भारत सरकार का आदेश आया जिसने काम करने की सारी बाधायें दूर कर दीं। जैसे बच्चे के जन्म के छठवें दिन घर में छठी का उत्सव मनाया जाता है और कामना की जाती है कि जन्मे बच्चे का भाग्य प्रबल हो और भविष्य उज्जवल हो, सातवां नया आदेश सन 2012 में आया और इसने पूरे प्रदेश को प्रफुल्लित करके रख दिया, संतान जन्म के बारहवें दिन संतान का बारहवां मनाकर यह बताया जाता है कि अब यह संतान राष्ट्रहित,परिवार हित व समाज हित के लिए कार्य करेगा।

4 जनवरी, 2012 का यह आदेश हमें यही संदेश देता है कि अब सिर्फ़ कार्य करना है और कार्य करते हुए पद्धति को आगे ले जाना है इसे हम महज़ संयोग नहीं कहेंगे और न ही शब्दों की बाज़ीगरी, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबकुछ वही घटित हुआ जो परम्पराओं में वर्णित है। शिशु जन्म के बाद शिशु को पढ़ना होता मेहनत करनी होती है अपने लिए दिशा तय करनी होती है अभिभावक पठन पाठन के लिए सिर्फ़ विद्यालय का चयन करते हैं और ज्ञानार्जन की प्रक्रिया पूरी करते हैं लेकिन ज्ञान और प्रतिभा का प्रदर्शन पालक नहीं जातक करता है, ठीक इसी तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अगुवाकारों ने 4 जनवरी, 2012 का आदेश लाकर कार्य करने का रास्ता बना दिया 2 सितम्बर, 2013 और 14 मार्च, 2016 उनके कार्य रूप में परिणित करने व अधिकार की पुष्टि का आदेश है। अब आपको इसी पर कार्य करते हुए आगे बढ़ना है इतना पाने के बाद किस नये की तलाश में हैं क्या आपने ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वाहन किया है ? अपेक्षायें आवश्यक हैं लेकिन उन अपेक्षाओं के लिए कार्य आपको ही करने होंगे हर पल नया होगा लेकिन नये पन के लिए हम सबको सामुहित प्रयास करने होंगे मात्र संवाद के माध्यम से या पूछ लेने से काम नहीं चलने वाला है कि कुछ नया हुआ क्या ? नये पन की तलाश में जो लोग कार्य नहीं कर रहे हैं या सफ़लता न मिलने की बात करते हैं वह सही माने में कार्य कर ही नहीं रहे हैं चूंकि किसी कार्य को करने के लिए जितने आवश्यक उपकरणों की आवश्यकता होती है वह सारे उपकरण आपको बोर्ड द्वारा उपलब्ध करा दिये गये हैं इन उपकरणों का प्रयोग कैसे करेंगे यह कला भी बोर्ड के अधिकारियों ने आपको सिखा दी है यदि आप अब भी नहीं सीख पाये तो बोर्ड के किसी सक्षम अधिकारी के सम्पर्क में आयें और जीवन जीने की कला सीखें, निराशा, अवसाद और चिन्ता आपको अकर्मरणों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देगी किसी और के गुण दोषों पर चर्चा करने से अच्छा है हमें जो मिला है उसपर ही संतुष्ट हों और यह आप निश्चित मानिये कि आपको जितना कुछ मिल चुका है अगर उसका उपभोग आप नहीं कर पाते तो शायद आप कुछ और पाने के लायक नहीं हैं, विधि सम्मत ढंग से कार्य करते हुए उद्देश्य को पाने के लिए कार्य करें चूंकि आने वाले दिनों में आपको बहुत कुछ मिलने वाला है लेकिन जो ले पायेगा वही उसका उपभोग करेगा इसके लिए कृष्ण और सुदामा का एक प्रसंग हर समय याद रखें कि सुदामा और कृष्ण परम मित्रों में थे सुदामा की दुर्दशा को देखकर कृष्ण ने उन्हें सबकुछ दे दिया लेकिन दिशा भ्रमित होने के कारण सुदामा कुछ नहीं देख पाये और कहा कैसा मित्र है ! कुछ दिया ही नहीं।

ठीक इसी तरह केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों ने हम जैसे सुदामाओं को सब कुछ दे दिया है परन्तु हमारी दृष्टि अभी कुछ नया पाने की है, इसलिए नये की तलाश में भटकना छोड़कर जो मिला है उसका उपभोग करें निश्चित मानिये कि जब आप कार्य करने लगेंगे तब मज़ा आने लगेगा और तभी आपको नये का वास्तविक स्वाद मिलेगा, किसी ने कहा है–जो ढूढ़ा तो पाईयां गहरे पानी पैठ... इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी यही लागू है जो मन लगाकर सिर्फ़ कार्य के लिए समर्पित हैं वह सब पा रहे है और जो सतह पर तैरते हुए मोती की तलाश करते है उन्हें मोती की जगह सिर्फ़ पानी के बुलबुले मिलते हैं सतह से धरातल की दूरी ज़्यादा नहीं होती बस बुलन्द हौसले के साथ तैरना आना चाहिये और न चलने वाले के लिए थोडी दूरी भी वर्षों तक नहीं तय की जा सकती है, रायबरेली– प्रतापगढ से ज़्यादा दूर नही है यह तैरने वाले पर है कि दूरी कितने दिन में तय करता है या नहीं करता है, लेकिन हमारे तैराक कुशल हैं वह कुशलता से तैरते हुए हर नदी पार कर लेंगे।

इसलिए पूछने के बजाए कार्य करने में विश्वास रखें।

प्रचार्यों एवं केन्द्र व्यवस्थापकों की बैठक सम्पन्न

बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 से सम्बद्ध इलेक्ट्रो होम्योपैथिक इन्सटीट्यूट/मेडिकल इन्सटीट्यूट/स्टडी सेन्टर/गाइडेन्स सेन्टर्स के व्यस्थापकों की बैठक बोर्ड के मुख्यालय लखनऊ में सम्पन्न हुई।

बोर्ड के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने अपना वकतव्य देते हुए बताया कि आज चारो ओर कोविड का बोल बाला है कोविड जैसी आपदा को अवसर में परिवर्तित करने का समय आ गया है हमें अपनी शिक्षा की नीति में परिवर्तन करते हुए ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए यही समय की मांग है। लखीमपुर से पधारे बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 की प्रबन्ध कमेटी के सदस्य डा0 राकेश शर्मा ने कहा कि 2004 से 2012 तक का समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए बड़ा प्रतिकूल था ऐसे विकट समय में बोर्ड के चेयरमैन ने अपनी योग्यता, निष्ठा एवं कार्यकुशलता का परिचय देते हुए आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक सम्मानजनक स्थिति में खड़ा कर दिया है, नाविक ने नाव को भंवर से तो निकाल दिया अब हमारा कर्तव्य बनता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की नाव को शीर्ष से शीर्षतम पायदान पर पहुँचायें, हमें सरकार ने शिक्षा, चिकित्सा, रजिस्ट्रेशन एवं अनुसंधान का पहले ही अधिकार दे रखा है।

उन्होंने कहा कि कोविड–19 की सम्भावनाओं को देखते हुए बोर्ड के निर्देशानुसार हम गत वर्ष से ही ऑनलाइन शिक्षा का कार्यक्रम चला रहे हैं जिसमें हमें सफलता भी प्राप्त हो रही है, डा0 शर्मा ने कहा कि वे ऑनलाइन शिक्षा के साथ ही सम्पर्क कार्यक्रम भी चला रहे हैं तथा कोविड प्रोटोकाल के अनुसार ऑफलाइन कक्षाओं का आयोजन भी कर रहे है। भगवान महावीर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक इन्सटीट्यूट, जौनपुर के प्रधानाचार्य एवं बोर्ड द्वारा संचालित इलेक्ट्रो होम्योपैथिक

मीटिंग में भाग लेने आये हुये प्रतिनिधि सर्वश्री डा0 भूप राज श्रीवास्तव, डा0 प्रिंस श्रीवास्तव, डा0 प्रमोद कुमार मौर्या, डा0 एखलाक, डा0 शिव कुमार पाल, डा0 नरेन्द्र भूषण निगम आदि

मीटिंग में ही बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0एच0 इदरीसी को मिठाई खिलाते हुये डा0 आर0 के0 कपूर साथ में डा0 आर0 के0 शर्मा–लखीमपुर

जागरूकता अभियान के राज्य संयोजक डा0 प्रमोद कुमार मौर्या ने मीटिंग को सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य स्तर पर सम्पर्क अभियान चलाकर इलेक्ट्रो होम्योपैथों के साथ साथ हमें जनमानस में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति व्यापक जागरूकता फैलानी चाहिए उन्होने इस हेतु प्रारम्भिक रूप से 5 जनपदों का चयन भी किया है उसमें शीघ्र ही अभियान प्रारम्भ किया जायेगा। अवध इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट, लखनऊ के संस्थापक एवं प्राचार्य डा0 आर0 के0 कपूर ने अपने इन्सटीट्यूट के 40 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आये हुए सभी संस्थापकों/व्यस्थापकों को मिष्ठान खिलाते हुए लोगों से अपील की कि वह आगामी कुछ माह में एक आयोजन करेंगे जिसमें आप लोग अपने स्टाफ के साथ आमंत्रित हैं, उन्होंने बोर्ड से मांग की कि आन लाइन शिक्षा देने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाये।

बुन्देलखण्ड स्टडी सेन्टर हमीरपुर के संचालक एवं बुन्देलखण्ड के प्राभारी डा0 नरेन्द्र भूषण निगम ने कहा कि जनमानस में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए चिकित्सा ही उचित माध्यम है इसलिए हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक सीनों, अध्यनकेन्द्रों एवं संगठनों को अधिक से अधिक संख्या में चिकित्सा एवं जागरूकता शिविर लगाने चाहिए। डा0 प्रिन्स श्रीवास्तव महाराजगंज, डा0 भूपराज श्रीवास्तव बहराइच, डा0 इखलाक इटावा, डा0 इसरार सिरसागंज, डा0 शिवकुमार पाल फिरोजाबा, डा0 पी0 एन0कुशवाहा रायबरेली एवं डा0 राम औतार कुशवाहा कानपुर ने अपने विचार व्यक्त किये।

मीटिंग में भाग लेने आये हुये संस्था प्रमुखों का एक ग्रुप फोटो सेशन

मीटिंग को सम्बोधित करते हुये रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आदेश प्राप्त, इहमाई द्वारा अनुमोदित)

8— लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ—226001

प्रशा0 कार्यालय : 127/204 ''एस'' जूही, कानपुर—208014

website- www.behm.org.in Email: registrarbehmup@gmail.com

F.M.E.H. व A.C.E.H. पाठयक्रमों के संचालन हेतु निम्न जनपदों में स्टडी सेन्टर्स स्थापनार्थ इच्छुक व्यक्तियों/संस्थाओं से आवेदन आमंत्रित हैं

इलाहाबाद, कौशाम्बी, बाँदा, चित्रकूट, झाँसी, ललितपुर,आगरा, मथुरा, मैनपुरी, एटा, कासगंज, हाथरस,मेरठ, बागपत,बुलन्दशहर, सहारनपुर,शामली,मुजफ़्फ़र नगर, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा, सम्भल,बरेली, बदायूँ, मुरादाबाद, पीलीभीत, हरदोई, सीतापुर, फ़ैज़ाबाद, सुलतानपुर, श्रावस्ती, बस्ती, गोरखपुर, खलीलाबाद,ग़ाज़ीपुर, बलिया, वाराणासी, चन्दौली, भदोई, औरैया,फर्रुखाबाद एवं कन्नौज।

आवेदन पत्र एवं निर्देश बोर्ड की वेबसाइट www.behm.org.in (link Affiliation) से डाउनलोड कर सकते हैं।

Offered Courses

Name of the Course	Abbreviation	Eligibility	Duration
Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy	F.M.E.H.	10+2 (Any Stream) or Equivalent	Two Years (4 Semester)
Advance Certificate in Electro Homoeopathy	A.C.E.H.	Registered Practitioner Any Branch or Equivalent	1 Semester
Graduate in Electro Homoeopathic System	G.E.H.S.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	4 Years Plus (1 Year Internship)
Post Graduate in Electro Homoeopathy	P.G.E.H.	Graduate in any Medical Stream or Equivalent	2 Years

बी0ई0एच0एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर—14 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर—14 से प्रकाशित किया।